बालमन झरोखा

छत्तीसगढ़

प्रथम अंक

वर्ष 2026

माह अगस्त

Scan or Click

प्रधान संपादिका : दीपिका श्रीवास्तव

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

बालमन झरोखा

बालमन बच्चों की रचनात्मकता, कल्पनाशीलता और अभिव्यक्ति को एक सशक्त मंच प्रदान करने वाली बाल पत्रिका पहल है। इसकी शुरुआत धीरज कुमार राजकीय शिक्षक सम्मान प्राप्त शिक्षक के द्वारा टीचर्स ऑफ बिहार (Teachers of Bihar) के अंतर्गत एक जिला स्तरीय बाल पत्रिका के रूप में की गई थी। बच्चों, शिक्षकों और शिक्षा से जुड़े रचनात्मक लोगों के निरंतर सहयोग से इसका विस्तार होता गया और जिला स्तर से आगे बढ़ते हुए यह राज्य स्तर और अब राष्ट्रीय स्तर की पहल के रूप में विकसित हो चुकी है।

आज भी बालमन तथा बालमन परिवार से जुड़ी सभी सहयोगी पत्रिकाएँ टीचर्स ऑफ बिहार के अंतर्गत संचालित होती हैं। बालमन अब केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक ऐसा मुख्य रचनात्मक मंच (Umbrella Platform) है, जिसके अंतर्गत देश के विभिन्न राज्यों, जिलों, प्रखंडों एवं विद्यालयों में बच्चों की स्थानीय पत्रिकाओं को विकसित करने के लिए मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया जाता है।

बालमन परिवार की वर्तमान सहयोगी शाखाओं में–

- बालमन – मुख्य शाखा
- बालमन रेलगाड़ी – उत्तर प्रदेश
- बालमन झरोखा – छत्तीसगढ़

शामिल हैं। भविष्य में अन्य राज्यों, जिलों, प्रखंडों और विद्यालयों की बाल पत्रिकाएँ भी बालमन परिवार से जुड़कर अपनी विशिष्ट स्थानीय पहचान के साथ कार्य कर सकती हैं।

यदि आप भी अपने राज्य, जिले, प्रखंड या विद्यालय में बच्चों के लिए पत्रिका शुरू करना चाहते हैं, तो बालमन एवं टीचर्स ऑफ बिहार से जुड़कर आवश्यक मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।

बालमन – जिला से शुरू हुई एक पहल, जो आज बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का बढ़ता हुआ राष्ट्रीय परिवार है।

एक पहल – टीचर्स ऑफ बिहार

बालमन झरोखा

सम्पादकीय

प्यारे बच्चों,

बालमन झरोखा छत्तीसगढ़ पत्रिका आपके समक्ष प्रस्तुत है ।इस पत्रिका के प्रस्तुतीकरण की प्रेरणा मुझे टीचर्स ऑफ बिहार बालमन पत्रिका के प्रधान संपादक श्री धीरज कुमार जी के द्वारा मिली है ।प्रत्येक बच्चा प्रतिभाओं का धनी होता हैं बस जरूरत होती है उनकी प्रतिभाओं को सामने लाकर उकेरने की ।बालमन झरोखा पत्रिका छत्तीसगढ़ का यही प्रयास है कि छत्तीसगढ़ के बच्चों की प्रतिभाओं को एक मंच देना ताकि उनके प्रतिभा में और निखार आये एवं उन्हें अपनी प्रतिभाओं को संवारने के अवसर प्राप्त हो।कई बच्चे अनेक प्रतिभाओं के धनी होते हैं उन्हें अपने प्रतिभाओं लोगों के सामने लाने का एक अच्छा अवसर प्राप्त होगा ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि बालमन झरोखा छत्तीसगढ़ पत्रिका नौनीहाल बालक बालिकाओं के प्रतिभाओं को संवारने में लाभदायक सिद्ध होगी । ।पत्रिका के प्रकाशन से बच्चों में एक नए जोश और उत्साह का प्रवाह होगा जिससे उनकी रचनात्मकता और सृजनात्मकता में भी निखार आएगा । मैं उन सभी शिक्षकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं जिनके अथक प्रयास से इस पत्रिका को नया आयाम मिल पाया है । अतः यह पत्रिका पूरी तरह से हमारे नन्हे नौनीहालों को समर्पित है जिससे हमारे देश का भविष्य उज्जवल होगा ।

"आइये हम सब अपने प्रयासों से नौनीहालों को एक नई ऊंचाई दे ।"

दीपिका श्रीवास्तव
(सहायक शिक्षिका)
शासकीय प्राथमिक शाला हरदी
विकासखंड - बिल्हा
जिला - बिलासपुर
(छत्तीसगढ़)

बालमन झरोखा (छत्तीसगढ़)

के लिए

शुभकामना संदेश

अपार हर्ष के साथ ये कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि बच्चों के मन में छिपी कल्पनाओं, भावनाओं, प्रतिभाओं और सृजनात्मकता को शब्दों एवं रंगों के माध्यम से अभिव्यक्ति देने का सुंदर प्रयास है "बालमन झरोखा"। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि नन्हे मन की उड़ान को पंख देने वाला एक सशक्त मंच है।

बालमन पत्रिका की छत्तीसगढ़ टीम द्वारा प्रस्तुत इस अभिनव पहल के लिए मैं हृदय से अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। विशेष रूप से प्रधान संपादिका श्रीमती दीपिका श्रीवास्तव के नेतृत्व में किया जा रहा यह प्रयास निश्चित रूप से बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने और उन्हें अपनी बात कहने का अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

मेरा विश्वास है कि "बालमन झरोखा" बच्चों की कल्पनाओं का ऐसा सुंदर दर्पण बनेगा, जिसमें उनकी मासूम सोच, अनोखी प्रतिभा और सुनहरे सपने दिखाई देंगे। यह प्रयास बाल साहित्य और बाल प्रतिभा के विकास की दिशा में एक प्रेरणादायी कदम है।

इस रचनात्मक यात्रा के लिए श्रीमती दीपिका श्रीवास्तव एवं पूरी छत्तीसगढ़ टीम को हार्दिक बधाई एवं अनंत शुभकामनाएँ।

ईश्वर करे यह झरोखा निरंतर खुलता रहे और देशभर के नन्हे रचनाकारों की प्रतिभा का प्रकाश दूर-दूर तक फैलाता रहे।

स्नेह एवं शुभकामनाओं सहित

धीरज कुमार(प्रधान संपादक)
बालमन राष्ट्रीय संस्करण
भभुआ, कैमूर(बिहार)

बालमन झरोखा
छत्तीसगढ़

माह अगस्त | वर्ष 2026

संपादक मंडल

प्रधान संपादिका

दीपिका श्रीवास्तव
(प्राथमिक शाला हरदी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़)

कवर पेज डिज़ाइनिंग

मनीष कुमार शर्मा
पी.एम. श्री राजकीयकृत बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
मनेर, पटना (बिहार)

संरक्षक

शिव कुमार (संस्थापक)
टीचर्स ऑफ बिहार

शिवेन्द्र कुमार सुमन (टेक्निकल टीम लीडर)
टीचर्स ऑफ बिहार

धीरज कुमार (प्रधान संपादक)
राष्ट्रीय पत्रिका बालमन

अनुक्रमणिका

page

1 अनमोल विचार

2 अन्तर खोजे

4 दर्शनीय स्थल

7 गणित सुडोकू

8 आजादी और बारिश स्पेशल पहेली

10 बालमन कविता

15 हर तस्वीर कुछ कहती हैं

हमारा परिवार

देश की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी

टीचर्स का बिहार की राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित बच्चों की रचनात्मक और सृजनात्मक प्रतिभा को एक नया आयाम देता ई पत्रिका। श्री धीरज कुमार के नेतृत्व में प्रकाशित।

उत्तर प्रदेश बालमन टीम द्वारा प्रकाशित रेलगाड़ी बालमन एक्सप्रेस उत्तर प्रदेश राज्य के बच्चों के लिए श्री शरद कुमार वर्मा के नेतृत्व में प्रकाशित ई पत्रिका।

छत्तीसगढ़ बालमन टीम द्वारा प्रकाशित बालमन झरोखा छत्तीसगढ़ राज्य के बच्चों के लिए श्रीमति दीपिका श्रीवास्तव के नेतृत्व में प्रकाशित ई पत्रिका।

बालमन झरोखा

अनमोल विचार

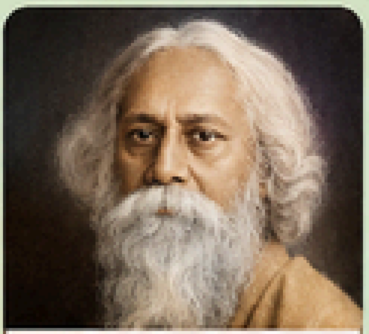

रवीन्द्रनाथ टैगोर
जन्म: 07 मई, 1861
मृत्यु: 07 अगस्त, 1941

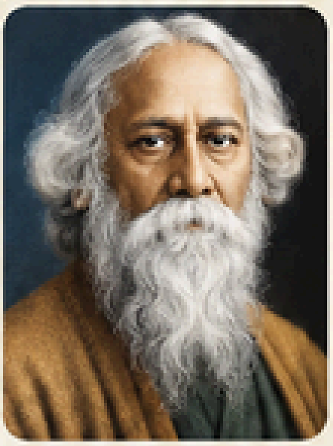

"अपने मन को भय से मुक्त करो और सत्य के मार्ग पर चलो, तभी तुम स्वतंत्र और मानवीय जीवन का अनुभव कर पाओगे।"

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

पद्य पंकज

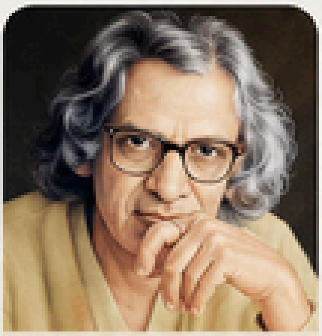

सुमित्रानंदन पंत
जन्म: 20 मई, 1900
मृत्यु: 28 दिसंबर, 1977

जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा,
वह भारत देश है मेरा।
जहाँ नदियाँ गाती हैं, जहाँ खुशियों की है धारा,
वह भारत देश है मेरा।।

– सुमित्रानंदन पंत
(हिन्दी साहित्य के 'छायावादी युग' के प्रमुख कवि)

योग से रहेंगे निरोग

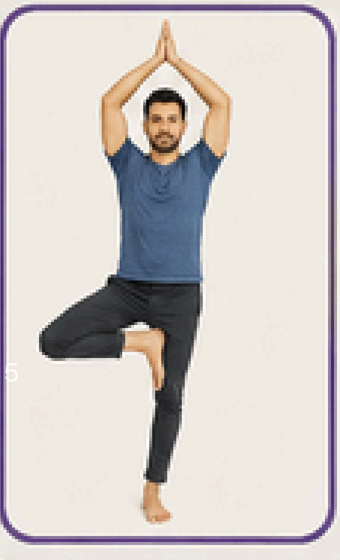

वृक्षासन (Tree Pose)

STAY ACTIVE!

विधि:
- सीधे खड़े हों। दायाँ पैर मोड़कर बायें जाँघ के अंदरूनी भाग पर रखें।
- हाथों को नमस्कार मुद्रा में या ऊपर की ओर जोड़ें।
- कुछ देर बाद पैर बदलें।

लाभ:
- संतुलन शक्ति बढ़ाता है, एकाग्रता में सहायक।
- रीढ़ की हड्डी को मजबूत बनाता है, तनाव कम करता है।

सावधानियाँ:
- उच्च रक्तचाप या चक्कर की समस्या हो तो दीवार का सहारा लें।

बालमन झरोखा से....

आइए अंतर खोजे

चित्र संख्या 01

चित्र संख्या 02

20 सेकेंड में 07 अंतर खोजे और बन जाए जीनिअस्

नन्हें उस्ताद की कलाकारी

बालमन झरोखा से

दुलेश्वरी ध्रुवे, कक्षा-5वीं
शासकीय प्राथमिक शाला -अकोला
विकास खंड -साजा
जिला -बेमेतरा (छ.ग.)

देविका केवट
शासकीय प्राथमिक शाला लछनपुर,
संकुल गोंदईया , विकासखंड बिल्हा
जिला बिलासपुर(छ.ग.)

शासकीय प्राथमिक शाला
हरदी ,बिल्हा
बिलासपुर(छत्तीसगढ़)

लीलम पटेल, कक्षा-5वीं
शासकीय प्राथमिक शाला -अकोला
विकास खंड -साजा
जिला -बेमेतरा (छ.ग.)

छत्तीसगढ़

दर्शनीय स्थल

बालमन झरोखा से

चित्रकोट जलप्रपात

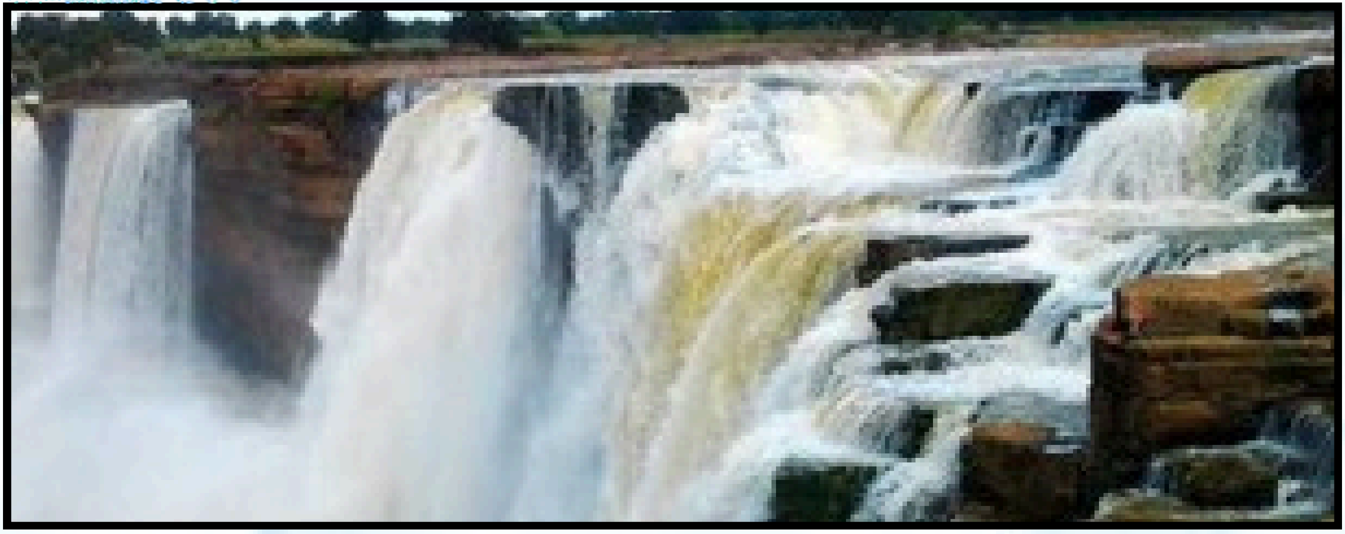

छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध चित्रकोट जलप्रपात बस्तर जिले के जगदलपुर से लगभग 38 किलोमीटर दूर इंद्रावती नदी पर स्थित है। इसे अपनी भव्यता और घोड़े की नाल जैसे आकार के कारण "भारत का नियाग्रा" कहा जाता है। यह भारत का सबसे चौड़ा जलप्रपात है, जिसकी चौड़ाई वर्षा ऋतु में लगभग 300 मीटर होती है।जगदलपुर से सड़क मार्ग द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। रायपुर से इसकी दूरी लगभग 273 किलोमीटर है। इसकी ऊँचाई लगभग 90 से 100 फीट (30 मीटर)चौड़ाई लगभग 300 मीटर (वर्षा ऋतु में)है।इसका आकार घोड़े की नाल (Horse-shoe) जैसा दिखता है।इसके नाम की उत्पत्ति के बारे में कहते है कि स्थानीय हलबी बोली में हिरण को 'चितर' कहा जाता है, इस क्षेत्र में हिरणों के झुंड रहने के कारण इसका नाम चित्रकूट या चित्रकोट पड़ा।

DHIRAJ KUMAR

बालमन झरोखा से.....

खूबसूरत तस्वीरें

दीक्षांत साहू ,सुशील सुकृति सारथी

शासकीय प्राथमिक शाला लछनपुर
संकुल गोंदईया, बिल्हा, छत्तीसगढ़

शासकीय प्राथमिक शाला
नयापारा गोंदईया ,संकुल गोंदईया
विकासखंड बिल्हा
जिला बिलासपुर

शाला परिसर में बागवानी करते हुए बच्चें
शासकीय प्राथमिक शाला -अकोला
विकास खंड- साजा
जिला- बेमेतरा

बदलता और बढ़ता प्राथमिक शाला

शासकीय प्राथमिक शाला नयापारा गोंदईया संकुल गोंदईया विकासखंड बिल्हा जिला बिलासपुर

नवीन शासकीय प्राथमिक शाला सड़क पारा भरारी में स्काउट गाइड के बच्चों द्वारा पौध रोपण किया गया

नवीन प्राथमिक शाला सड़क पारा भरारी

माचिस की तीली से टेलीफोन
प्राथमिक शाला कोषटापारा

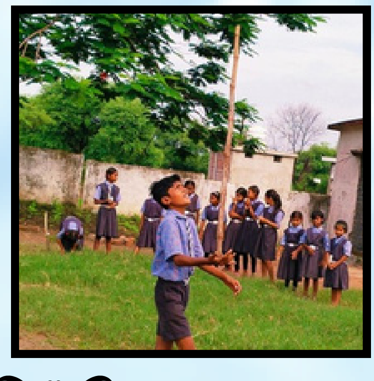

शासकीय प्राथमिक शाला -अकोला
विकास खंड- साजा
जिला- बेमेतरा

बालमन झरोखा से

गणित सुडोकू

1	5				7			2
2		8				2		
3	9						4	
4		5			6			
5	4						9	1
6		9			2			
7	8		1					6
8		4			9			
9	7					6		2

A B C D E F G H I

आप इसे सॉल्व कर हमे 9431680675 पर व्हाट्सएप कर सकते है।

बालमन झरोखा से...

पहेली जो आप बुझे

ऐसी कौन सी चीज है जो बारिश में चाहे जितनी भीग जाए, पर वह कभी गीली नहीं होती?

जरा सोच कर बताइएगा की लगातार दो दिन तक बारिश क्यों नहीं हो सकती?

देश की जान है,शहीदों की शान है।
तीन रंगों से पहचान है,बीच में नीला चक्र निशान है।।

नई दिल्ली की शान,15 अगस्त पर देश का इस पर ध्यान
जल्दी बताओ इस ऐतिहासिक स्थल का नाम।।

सही उत्तर : पानी,क्योंकि दिन के बाद रात आ जाता है, तिरंगा झंडा, लाल किला

बालमन कविता

बारिश

प्रिया यादव,कक्षा-5वीं
शासकीय प्राथमिक शाला -अकोला विकास खंड -साजा
जिला -बेमेतरा (छ.ग.)

बालमन कविता

जीवन का रास्ता।

मेहनत की कमाई सबको मज़ाक़ लगता है
अगर तो खुद करके देखे तो
कितना बड़ा काम लगता है।

ज़िंदगी तो सबको जीना है।
बेकार क्यों बनाते हो
एक दिन वह आएगा,
वह ज़िंदगी जीने का रास्ता दिखाएगा।

झूठ बोलना पड़ता है।
सच बोलना भी पड़ता है।
ज़िंदगी जीने के लिए
हर रास्ता भी बनाना पड़ता है।

हर मुश्किल का सामना करना पड़ता है
पर वो अपने मंजिल तक पहुँच जाता है।

कल्पना साहू
कक्षा - 10 वीं
शासकीय हाई स्कूल
झलफा

"मेरा शासकीय हाई स्कूल झलफा"

झलफा की गलियों में खड़ा है गर्व से,
शासकीय हाई स्कूल मेरा प्यारा।
ज्ञान की ज्योति जलाता है यहाँ,
हर बच्चे का भविष्य सँवारता।

सुबह-सुबह जब घंटी बजती है,
दौड़ के आते हम सारे साथी।
टीचर पढ़ाते प्यार से हमको,
बनाते हमको देश के सिपाही।

क्लास की दीवारें, मैदान की मिट्टी,
हर कोने में यादें बसती हैं।
पढ़ाई, खेल और अनुशासन से,
यहाँ ज़िंदगी की सीख मिलती है।

Shweta sahu
Class-10th

अपना छत्तीसगढ़

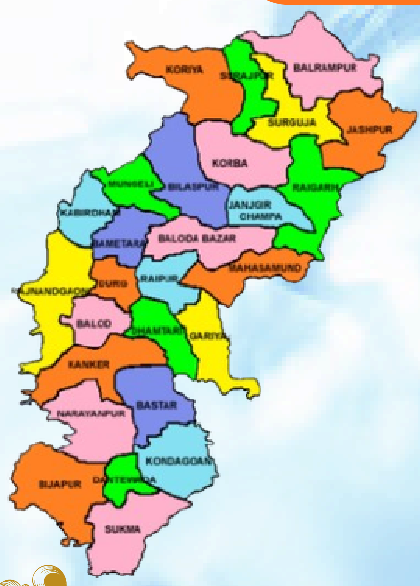

छत्तीसगढ़ का प्राचीन नाम दक्षिण कोसल था। इसका यह आधुनिक नाम यहाँ स्थित 36 गढ़ों (किलों) के आधार पर पड़ा है, जो कि शिवनाथ नदी के उत्तर और दक्षिण में बंटे हुए थे। इस नाम का आधिकारिक और लिखित रूप से पहली बार प्रयोग मराठा काल में सन 1795 में किया गया था।

बालमन झरोखा

कविता

पढ़ाई में आगे बढ़ने का रास्ता

पढ़ाई में रास्ता कभी भी
आसान नहीं होती है,
हर क़दम पर नई परीक्षा होती है।
कभी गर्मी तो कभी ठंडी मिलती है,
तो कभी बरसात की पानी होती है।।
चलते, चलते हम तक जाते हैं,
फिर भी रुकना नहीं है ।
अपने सपनों को पूरा करने के लिए,
हर दिन आगे बढ़ना चाहिए।।
कभी हार का सामना होता है,
तो कभी जीत भी मिल ही जाती है।
जो हिम्मत कभी नहीं हारता है,
उसकी मंजिल उसके पास आती है।।
रास्ते में काटे बहुत मिलते है,
फूलों कि खुशबू भी मिलती है।
हर मुश्किल कुछ सिखा देती है,
नई उम्मीद फिर मिलती है।।
माता और पिता आशीर्वाद लेकर,
गुरुओं का सम्मान करना है,
सच्चाई और मेहनत कि राह पर।
जीवन भर आगे बढ़ना है।।
रास्ता हमें यह सिखाता है,
कभी किसी से डरना नहीं।
अपने लक्ष्य को पाने के लिए,
मेहनत करना छोड़ना नहीं।।
जीवन का हर नया रास्ता कठिन होता है,
लेकिन नई सिख दे जाता है।
जो विश्वास रखता है खुद पर,
वहीं आगे जाकर सफलता पाता है।

नाम - पल्लवी मरावी
कक्षा - 10 वीं
शास.हाई स्कूल झलफा
छत्तीसगढ़

बालमन झरोखा

एक नज़र इधर भी देखे

PS PENDARIDIH

शासकीय प्राथमिक शाला हरदी
विकासखंड - बिल्हा
जिला - बिलासपुर छत्तीसगढ़

प्राथमिक शाला सड़क पारा भरारी

प्राथमिक शाला कोषटापारा

खेल गतिविधि से पढ़ाई

Preposition word/Hide n seek

बच्चों को छुपाने छुपाने का खेल पसंद होता है, और ये सबसे अच्छा माध्यम है preposition word को सीखने का जिसमें हम विषय अथवा वस्तु की स्थिति को बताते हैं।

बच्चों को दो समूहों में विभाजित किया एक समूह छुपा और दूसरा समूह ढूंढने लगा, जब पहले समूह ने ढूंढा तब वे हिंदी में कहते थे दरवाजे के पीछे टेबल के नीचे मैने साथ साथ उन्हें English में बताया कि दरवाजे के पीछे को behind the door कहना टेबल के नीचे को under the table कहना क्रमशः यह दूसरे समूह ने किया तब बच्चे English में कहने लगे। फिर यही गतिविधि मै स्वयं छुप कर पूछने लगी इसके पश्चात मैने देखा कि बच्चों ने preposition word in, on, under, infront, behind, near जैसे शब्दों का प्रयोग कर के वाक्य कहने लगे । यह गतिविधि हम कक्षा 1 से कक्षा 5 तक करवा सकते है।

प्रीति चन्द्रवंशी
सहायक शिक्षक
शा. प्रा. शाला भोजपुरी
संकुल केंद्र पोंसरी
ब्लॉक बिल्हा
जिला बिलसपुर
छत्तीसगढ़

अपनी संस्कृति अपनी परम्परा

लोक संस्कृति और परंपरा का संगम: धूमधाम से मना छत्तीसगढ़ का पहला पर्व हरेली

प्राथमिक शाला बिल्हा, संकुल कन्या बिल्हा परिसर में छत्तीसगढ़ के पावन लोक पर्व 'हरेली' की अद्भुत छटा देखने को मिली। बच्चों को अपनी मिट्टी और संस्कृति से जोड़ने के उद्देश्य से इस विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में शाला के प्रधान पाठक श्री साधराम मरकाम जी ने बच्चों को हरेली के पावन पर्व के बारे में बताया, वहीं शिक्षक श्री कलेश्वर साहू जी ने छत्तीसगढ़ी परंपराओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। इसके पश्चात सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों ने मिलकर श्रद्धापूर्वक हरेली पूजन किया।

इस आयोजन की सबसे खास बात यह रही कि बच्चे अपने-अपने घरों से बनाकर छत्तीसगढ़ के स्वादिष्ट पारंपरिक व्यंजन जैसे चीला, बोबरा, गुलगुला भजिया और सोहारी बनाकर लाए थे। सभी ने एक साथ बैठकर इन पकवानों का स्वाद लिया, जिससे बच्चों में सामाजिक समरसता और एकजुटता का संदेश गया।

खान-पान के बाद परिसर में छत्तीसगढ़ के पारंपरिक खेलों जैसे गेड़ी चढ़ना और नारियल फेंक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें बच्चों ने पूरे उत्साह से भाग लेकर उत्सव का आनंद उठाया।

इस गरिमामय कार्यक्रम में प्रधान पाठक श्री साधराम मरकाम, शिक्षक श्री पुनीराम साहू, श्री कलेश्वर साहू, श्रीमती श्वेता केसरी, श्रीमती नीलम सूर्यवंशी एवं समस्त शाला परिवार व छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

नैतिक बाते

पीहू और धीरू के साथ

बारिश में जगह-जगह पानी जमा होने से मच्छर और बीमारियां फैलती हैं।आप अपने आसपास पानी जमा न होने दें और स्वच्छता का विशेष ध्यान देते रहे।गमले, कूलर,टायर,टूटे फूटे बर्तन आदि में पानी को जमा न रहने दे।

बारिश में नए पौधे लगाना और उनकी देखभाल करना अच्छा होता है । पौधारोपण करने से प्रकृति के प्रति लगाव तो बढ़ेगा ही साथ ही सभी के प्रयासों से धरती पर हरियाली बढ़ेगी।

बालमन झरोखा

हर तस्वीर कुछ कहती है....

प्राथमिक शाला हरदी बिलासपुर

हर घर तिरंगा, घर -घर तिरंगा अभियान अंतर्गत तिरंगा रैली निकाली गयी।
शासकीय प्राथमिक शाला- अकोला
विकास खंड - साजा
जिला -बेमेतरा

विषय मित्र कक्षा चौथी के बच्चों द्वारा गतिविधियों के माध्यम से बालवाड़ी एवं पहिली कक्षा के बच्चों को अंक पहचान प्राथमिक विद्यालय गोंडपारा लाखासर

शासकीय प्राथमिक शाला- अकोला
विकास खंड - साजा जिला -बेमेतरा

प्राथमिक शाला हरदी बिलासपुर

बालमन जीव-जगत

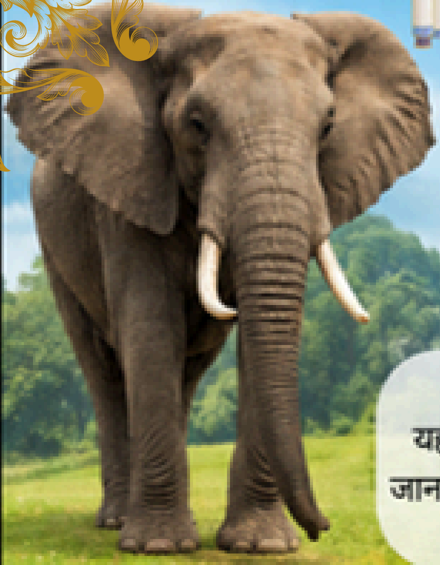

हाथी

धरती का सबसे बड़ा स्थलीय जीव

विश्व हाथी दिवस (12 अगस्त)

हाथी एक बुद्धिमान, शांतिप्रिय और सामाजिक प्राणी है। यह अपने विशाल आकार, लंबी सूंड और मजबूत दांतों के लिए जाना जाता है। हाथी जंगलों का सच्चा मित्र और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

1. सामान्य परिचय

- वैज्ञानिक नाम : Elephas maximus (एशियाई हाथी)
  Loxodonta africana (अफ्रीकी हाथी)
- वर्ग : स्तनधारी (Mammalia)
- वंश : एलीफेंन्टिडी (Elephantidae)
- स्वभाव : शांतिप्रिय, बुद्धिमान, मिलनसार
- समूह में रहते हैं : झुंड (Herd)
- आयु : 60 – 70 वर्ष (औसतन)
- गर्भावस्था काल : 20 – 22 महीने
- शिशु (बच्चा) : एक बार में एक बच्चा
- आहार : शाकाहारी

2. विशेषताएँ

- हाथी का शरीर बहुत बड़ा और भारी होता है।
- इसकी खाल मोटी लेकिन संवेदनशील होती है।
- सूंड (Trunk) इसकी सबसे खास पहचान है, या सूंघने, खाने, पानी पीने, उठाने और संवाद करने में काम आती है।
- लंबे दांत (Tusk) मुख्यतः नर हाथियों में पाए जाते हैं।
- बड़े कान शरीर का तापमान नियंत्रित रखने में मदद करते हैं।
- पैरों में मोटे नाखून जैसे पट्टे होते हैं, जो चलने में सहारा देते हैं।

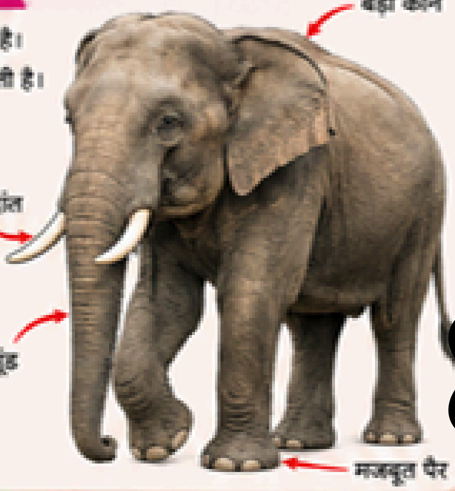

3. प्रकार

दुनिया में मुख्य रूप से हाथियों की दो प्रजातियाँ पाई जाती हैं –

1. एशियाई हाथी (Asian Elephant)
छोटे कान, पीठ पर उभार (डोम जैसा), नर और मादा दोनों में दांत हो सकते हैं।
पाए जाने वाले देश – भारत, श्रीलंका, नेपाल, थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि।

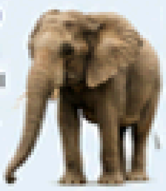

2. अफ्रीकी हाथी (African Elephant)
बहुत बड़े कान, पीठ सीधी होती है, केवल नर में दांत बड़े होते हैं।
पाए जाने वाले देश – अफ्रीका के विभिन्न देश।

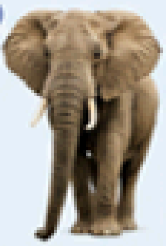

4. आवास

हाथी वन, घास के मैदान, नदी किनारे और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में रहते हैं। इन्हें पानी के स्रोतों के पास रहना पसंद है।

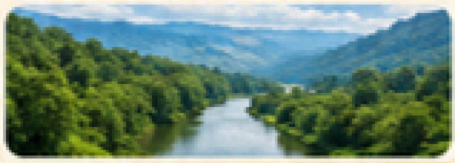

5. भोजन

हाथी मुख्यतः शाकाहारी होते हैं। वे घास, पत्ते, फूल, फल, छाल, बाँस और फसलों आदि खाते हैं। एक वयस्क हाथी प्रतिदिन 100 – 150 किलोग्राम भोजन और 100 – 200 लीटर पानी पी सकता है।

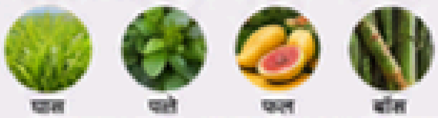

6. रोचक तथ्य

- हाथी बहुत बुद्धिमान होते हैं और याददाश्त बहुत मजबूत होती है।
- वे 4–5 किमी दूर की गंध पहचान सकते हैं।
- हाथी शोक भी मनाते हैं, यदि झुंड का कोई सदस्य मर जाए तो अन्य हाथी उसके पास कुछ समय तक रुकते हैं।
- सूंड में लगभग 40,000 से अधिक मांसपेशियाँ होती हैं।
- हाथी एक-दूसरे से कम आवृत्ति वाली ध्वनियों (Infrasound) के माध्यम से दूर तक संवाद करते हैं।

7. महत्व

- जंगलों के बीज फैलाने में मदद करते हैं।
- जंगल के रास्ते बनाते हैं जिससे अन्य जीवों को आवागमन में सहूलियत होती है।
- पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- पर्यटन और संस्कृति में विशेष स्थान रखते हैं।

8. संरक्षण की आवश्यकता

हाथियों की संख्या घट रही है, मुख्य कारण –
- अवैध शिकार (दांत के लिए)
- जंगलों की कटाई और आवास नष्ट होना
- मानव-हाथी संघर्ष

हमें चाहिए कि हम जंगलों की रक्षा करें, शिकार पर रोक लगाएं और हाथियों के प्राकृतिक आवास को सुरक्षित रखें।

हाथियों की रक्षा – प्रकृति की रक्षा

9. हम क्या कर सकते हैं?

- जंगलों और जीव-जंतुओं की रक्षा करें।
- हाथियों को नुकसान पहुँचाने वाली गतिविधियों का विरोध करें।
- प्लास्टिक का उपयोग कम करें और पर्यावरण को स्वच्छ रखें।
- वन्यजीव संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाएं।

**आओ मिलकर संकल्प लें –
हाथियों को बचाएं, प्रकृति को सजाएं।**

बालमन झरोखा

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

पत्रिका के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने के लिए दिए गए आईकॉन पर क्लिक करे।

आपको यह अंक अच्छा लगे तो अधिक से अधिक राज्य के अन्य प्राथमिक/मध्य/उच्च शाला तक शेयर करे।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करे

78793 87284   9431680675   7250818080

www.teachersofbihar.com